आओ चलें सम्पूरणता की ओर .....

02 / 11 / 14 की मुरली से

- स्वमान :-

√ मैं सिद्धि स्वरुप आत्मा हूँ ।

- गुण / धारणा / अभ्यास पर अटेंशन :-

√ विधि द्वारा सिद्धि

- बाबा से सम्बन्ध का अनुभव :-

√ बाप

- मनन चिंतन :-

√ स्वयं में सर्व शक्तियों को इमर्ज रूप में अनुभव करनी की सहज विधि क्या है ?

@ शिवभगवानुवाच :-

→_→ रोज रात को सोने से पहले बापदादा को पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो धरमराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

- होमवर्क :-

- Total Marks :- 50 -

- पॉइंट 1 To 7 के 5 मार्क्स हैं -

- पॉइंट 8 के 15 मार्क्स हैं -

(1) "वाह मेरा भाग्य"-आज पूरा दिन यही गीत गाते रहे ?

(2) "साथ रहेंगे.. साथ खायेंगे.. साथ पियेंगे.. साथ सोयेंगे.. साथ चलेंगे" का अपना वायदा निभाया ?

(3) जो सोचा वह स्वरुप भी अनुभव किया ?

(4) "मेरी नेचर .. मेरा स्वभाव ऐसा है" - इस तरह के शब्द तो नहीं कहे ?

(5) हर आत्मा से मधुर, शुभ भावना के, युक्तियुक्त बोल बोले ?

(6) कंप्लेंट के फाइल को समाप्त किया ?

(7) विघन व व्यर्थ संकल्प चलने वाली आत्माओं के प्रति स्वयं परिवर्तन होकर उनके प्रति शुभ भावना रख आगे उड़ते चले ?

@ बापदादा (12/10/2014) :-

→_→ निर्विघ्न चल रहा है ना । और आप सब भी प्यार से दिल से सेवा के निमित्त हो । बापदादा खुश है । हर एक अपने शक्ति प्रमाण जो करना चाहिए वह अभी तक तो कर रहे हैं । मुबारक हो ।

(8) निर्विघन अवस्था का अनुभव किया ? अपनी शक्ति प्रमाण जो करना चाहिए , वो किया ?

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले होमवर्क के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

● मनन चिंतन :-

√ स्वयं में सर्व शक्तियों को इमर्ज रूप में अनुभव करनी की सहज विधि क्या है ?

➢ बेहद के बाप से मिले ख़ुशी के खजाने सदेव चेक कर जमा कर पास विथ ऑनर पद प्राप्त करने से।
➢ बेहद के बाप से मिले रूहानी भाग्य को देख हर्षित रहकर सदेव उसके रूहानी नशे में रहने से।
➢ योगबल से सदेव परमात्मा प्यार में लवलिन होकर बेठ ने से।
➢ जो कुछ अपने पास है वो सब बेहद के बाप को सोपकर केवल ट्रस्टी बन रेहकर सदेव रूहानी सर्विस से जुड़े रहने से।
➢ में आत्मा हु के कथन के स्मृति स्वरुप बनने से।
➢ ब्राह्मण जीवन के नेचरल नेचर से गुण स्वरुप बनने से।
➢ सदेव युक्तियुक्त व् सर्व के लिए सुभ भावना के बोल बोलने से।
➢ सदेव सोचने और स्वरुप बनने दोनों को समान करने वाले बनने से।

ॐ शांति।